आपातकाल में सृजन फुलवारी

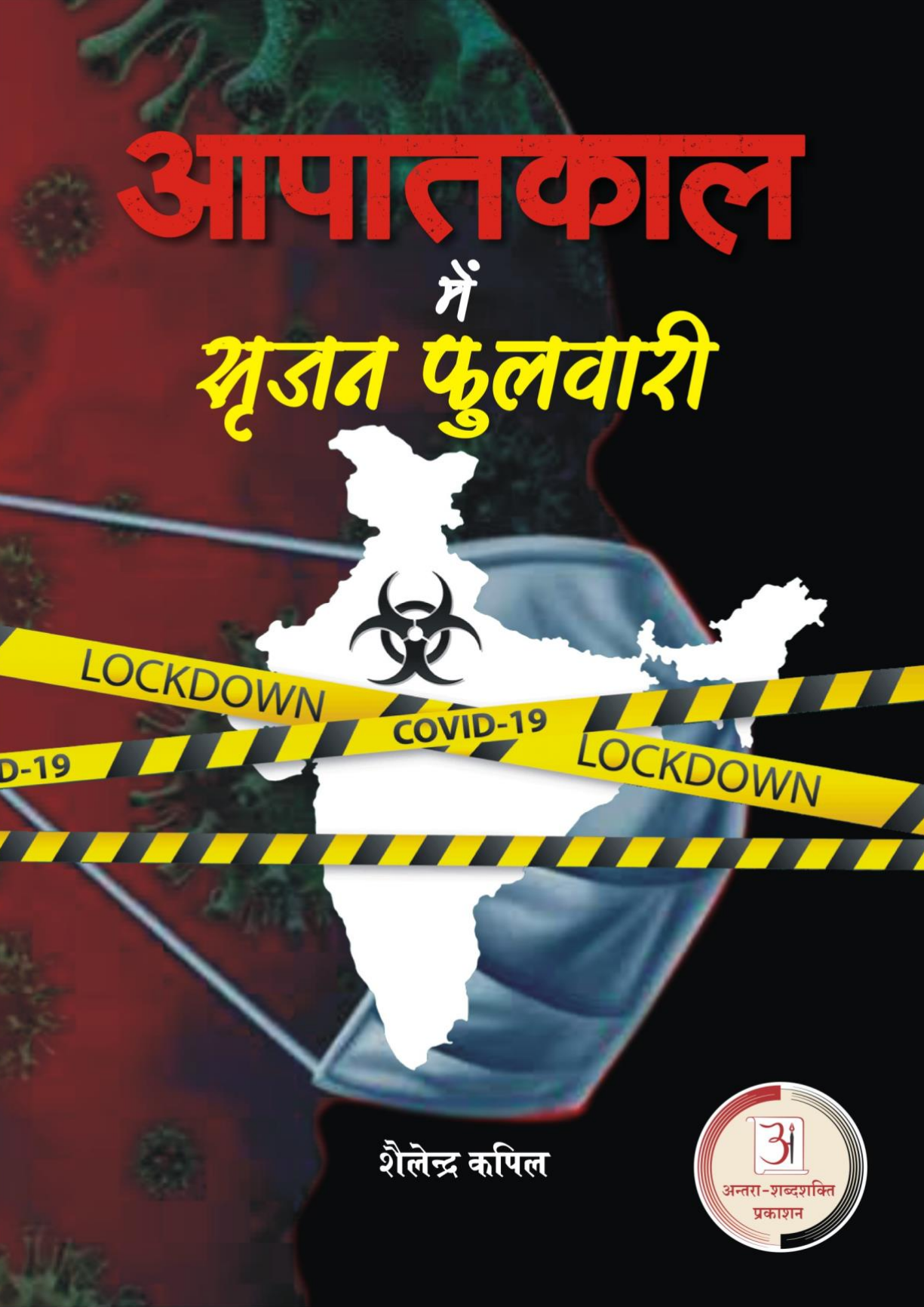

शैलेन्द्र कपिल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

शैलेन्द्र कपिल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-173-2

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, शैलेन्द्र कपिल

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SHAILENDRA KAPIL

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मुसाफिर का सफर	6
2.	पंजाब देश दा मान है	7
3.	विशाल संकल्प होते रहेंगें	8
4.	आ अब लौट चलें	9
5.	अपना कर्तव्य निभाएं	10
6.	निस्तब्धता की घड़ी	11
7.	सोचो जरा	12
8.	कविता व्याकरण	13
9.	चुनौतियाँ बेबुनियाद हैं	14
10.	मन को समझाएं	15
11.	बढ़े चलो, बढ़े चलो!	16
12.	हम जागेंगे	17
13.	बदलते परिवेश संग	18
14.	अभिप्राय	19
15.	प्रशासनिक कविता	20
16.	शब्दशक्ति	21

मुसाफिर का सफर

स्वपनिल पहर पूरे हो गये हैं,
आलौलिक पहर शुरु हो गये हैं,
साझं सन्देश आने शुरू हो गये हैं,
मंगलवार, मंगलमय गान शुरु हो गये हैं।

मुसाफिर रहना ही बेहतर है,
उत्कृष्टता की खोज में ही बेहतर है,
साजों के साथ रियाज कहीं बेहतर है,
मन को मिले संताप जैसे ही बेहतर है।

हिसाब किताब का जवाब नहीं होता,
अकं पाकर फिर हिसाब नहीं है होता,
यह जिंदगी उतार चढ़ाव से बनी है मानुष,
रास्ता खुद को तय करना पडता है,
प्रयासों के अतिरिक्त कोई और रास्ता नहीं होता।

मुसाफिर का सफर अमर है,
थककर बैठ जाना उसका नहीं धर्म है,
मुडकर देखते रहना उसका नहीं मंजर है,
एकला चलो रे, एकलव्य
बनकर मुकाम हासिल करना ही हठधर्म है।

पंजाब देश दा मान है

पंजाब एक खोज़ है, पंजाब एक ढाल है,
पंजाब ने इतिहास में, कर दिया कमाल है,

भारतवर्ष को ढाल बनकर हमेशां बचाया है,
हर बाहरी, अतिक्रमणकारी से टकराया है,
हडप्पा व मोहनजोदड़ो सभ्यता से अब तक,
कितनी बार विस्थापित हुआ व पुनः स्थापित होकर दिखाया है,

पूरे देश के लिये अन्नदाता है,
हरियाली से हरा भरा नजर आता है,
पकी फसलें स्वरणिम, रगों में, लहलहाती है,
पिंड वासियों की बाछें खिल जाती हैं,
जटा आई बैसाखी की गूंज सुनने में आती है,

हिंदू धर्म की रक्षा का बीड़ा उठाया है,
पहले पिता, फिर चारों पुत्रों का बलिदान दे कर दिखाया है,
भाई मरदाने ने खूब सांझ को निभाया है,
बंदे बैरागी ने भी अंतिम सांस तक मर्यादा को निभाया है,

सिक्ख धर्म की नींव, समानता का प्रतीक है,
निस्वार्थ सेवा करना, बन गई अब रीत है,
बंट गया पंजाब, लेकिन हौसला कभी नहीं डगमगाया है,
चढ दियां कलां विच रहनां है, हमेशा रह के दिखाया है..।
बोले सोनिहाल...। सर्बत दा भला....।

विशाल संकल्प होते रहेंगें

संकल्प हमारे प्रतिष्ठित हैं, संकल्प लेकर सासें सुरक्षित हैं,
संकल्प जगा रहे स्वाभिमान हैं, संकल्पों ने पकड ली सुरताल है,

धीरे धीरे संकल्प परिपक्व हो रहे हैं,
यथार्थ को समझ, हकीकत में बदल रहे हैं,
आदर्श हमारे लिए दिलचस्प हो रहे हैं,
समर्पित होकर मानवता के कृतज्ञ हो रहे हैं,

प्रयासों की दिशा निश्चित की है,
वंचितों को अंगुली पकडा दी है,
सवेंदनाओं को समझने में पहल की है,
इस पहल में सामाजिकता, वहन की है,

समय की पुकार है, फिर भी इंसान सकुचा रहा है,
भूख प्यास को देख रहा है, लेकिन बेबसता क्यों दिखा रहा है,
कुछ भी करो, अशंदान करके एक नयी शुरुआत करो,
मानव कहलाने के हकदार हो, मानवता का निर्वाह करो,

विशाल दिल, सकंल्प दूरगामी हैं,
समाजसेवा करने की हमनें ठानी है,
स्थापनाओं के संग, सूरत बदल कर दिखानी है,
आदर्शों को संभव बनाने की हो गई आदत हमारी पुरानी है,

चाहे कहो इसे बेवाकूफी है, नादानी है,
अधिकार दिलाने की बात, आगे बढ़ानी है,
मिलकर साथ चलेंगें, हम सब, हाथ डाले,
मानवता की पूजा में, जिंदगी अब जानी है।

आ अब लौट चलें

कभी अनभिज्ञ भी रहना चाहिए,
कभी अदृष्य भी हो जाना चाहिए,
कभी निष्ठुर होकर भी दिखाना चाहिए,
कभी कभार नतमस्तक भी हो जाना चाहिए,

ज्ञान प्राप्त कर इंसान मुस्कुराना भूल जाता है,
अक्लमंद होकर सूक्ष्मता में चला जाता है,
हर एक के काम में कमी निकालने में लग जाता है,
शिक्षा और ज्ञान का अर्थ भूलने लग जाता है,

अट्टहास क्या है पढ़कर ही समझ में आता है,
व्यंग्य पढकर मन ही मन मुस्कुराता है,
कहीं होली, कहीं अप्रैल फूल मनाया जाता है,
ज्ञान से वापसी कर स्वभाविकता में जाया जाता है।

जीवनशैली ही जनमानस संग है,
यह समझा और समझाया जाता है।
एक बार नहीं, बार-बार दोहराया जाता है,
फिर भी मन चंचल है, मचल जाता है...।।।

अपना कर्तव्य निभाएं

एक उदघोषणा हो गई है, एक आग्रह भी हो गया है,
समझदारी से परिचय देना है, देशहित में समाहित प्रयास हो चला है,

बदलते परिवेश को समझना है,
उपलब्ध अनुभवों का प्रयोग करना है,
मानवता के लिये जो सकंट आया है,
मिल जुलकर सामना, करना है,निपटना है,

अपने मनमुटावों को भूल जाना होगा,
अपने संस्कारों को निभा कर दिखाना होगा,
हर एक को अपना उत्तरदायित्व निभाना होगा,
एक दूसरे का साथ निभाना होगा।

वक्त पुकार रहा है, आपसे योगदान मांग रहा है,
विशेषज्ञ, आपकी सेवा के लिये तत्पर हैं,
एक आह्वान, बार बार दोहरा रहा है,

आओ स्वार्थ को बलिदान कर आगे बढ़े,
अपने बारे में भी सोचें व परिवार को भी चुने,
स्वच्छता की हम एक आदत सी डाल लें,
हसीं खुशी अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करें।

हम सभी जिम्मेदारी निभा सकते हैं,
हम अपनी रक्षा कर दिखा सकते हैं,
स्वयं पर नियंत्रण कर, हम सहजता अपना सकते हैं,
हम एक उदाहरण बन सकते हैं, हम उपाय सुझा सकते हैं....।
हर दिन, प्रतिदिन...।

निस्तब्धता की घड़ी

एक निस्तब्धता की घड़ी छाई है,
शायद एक इंसाफ की घड़ी आई है।
समय एक बार रुक सा गया हो जैसे,
आगे चलकर सीख लेने की घड़ी आई है।

भावों के प्रदर्शन में असमंजस में जा रहा है हर इंसान,
न हो रहे इसांफ के बारे में सोच रहा है,
हमारे समाज में हमारे बीच ऐसा क्यों हो रहा है,
अस्तित्व की स्वतंत्रता, कैसे सुनिश्चित करें,
खुद से संवाद हो रहा है.....।

कुछ पाने के लिये कुछ विशेष करना होगा,
अपनी चाहत के पीछे जी जान से लड़ना होगा,
बहुत हद तक बुद्धि का प्रयोग करना होगा,
जद्दोजेहद करनी होगी, दिल की बात पर भी विचार करना होगा...।।

आहिस्ता-आहिस्या संकट का समय निकल जायेगा,
आत्ममंथन से आत्मविश्वास संग नया सवेरा आयेगा।
हर कोई योगदान दे रहा है,
अग्नि परीक्षा से हर रोज गुजर रहा है।

हमारे कदम प्रयास, सही दिशा में चलकर रंग ला रहे हैं,
इंसान में, परिवार में, समाज में परिवर्तन के शंख बजा रहे हैं।

सोचो जरा

सुबह हुई,
फूल तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ,
आदत से मजबूर, मुझ से रहा न गया,
क्या इस अन्याय को सह न सका,

मैंने प्रश्न कर डाला,
गिरे हुए फूलों को उठा,
क्यों फूल तोड़ता है भला,
तुरंत उत्तर मिला,
ईश्वर पर फूल चढाने हैं,
तोड़ कर ही चढाने में है भला,

मैं भी प्रतिउत्तर के लिये तैयार,
गिरे हुए फूलों को क्यों नहीं उठा लेता...।
ईश्वर ने ही फूल गिरायें हैं,
सुनकर के वह सकपका सा गया,
लेकिन फूल तोड़ने का हठ नहीं रुका,

मैं भी मुस्कुरा दिया,
सोचा, बार-बार करूंगा सवाल,
ईश्वर से मेरी एक ही अराधना,
जरा सोच, हर इंसान को समझा,
ईश्वर के नाम पर हो रहे दहन को रुकवा..।

कविता व्याकरण

कविता पर व्याकरण के नियम,
कभी नहीं

नहीं चाहेंगें, आज सूरज न उगे,
कभी नहीं,

बरसात भी, अति कर दें,
कभी नहीं,

बेबुनियाद, आरोप लगते रहें,
कभी नहीं,

हम सभी, लापरवाही बरततें,
कभी नहीं,

विकट काल की घडी, छायी रहे, गहराई रहे,
कभी नहीं,

मन सुहावने, मौसम न बदलें,
बिल्कुल बदलते रहें,

परिवर्तन के नियम, जग कहे सही,
एकदम सही...।।।

चुनौतियाँ बेबुनियाद हैं

देखो! सुबह हुई है, सुबोध हुआ है,
सुबोधिनी प्रकृति का नव आवरण प्रदर्शित हुआ है,
देखो! प्रकृति अपनी गोद में बुला रही है,
भीनी-भीनी हवा में महक घोलकर कर गुदगुदा रही है।

प्रकाश की किरणों से नयी दिशाओं का सुबोध करा रही है,
चुन लो दिशाओं को मन से, एक जोत जला रही है,
मैं हूँ न कहते-कहते मुस्कुरा रही है,
भूल जाओ भेदभाव, मनमुटाव को, उदघोषित करती जा रही है।

कल और आज के अन्तर को पाटती जा रही है,
हर पल, हर क्षण से हमें मुखातिब करा रही है,
एक से एक पाठ पढ़ा रही है, जाप करा रही है,
जीवन का सार हर पल जीने में है, जी कर दिखा रही है।।

आओ मुस्कुराते हुए आगे बढें
बेबुनियाद चुनौतियों को स्वीकार करें,
मायने क्या होते हैं, आत्मसात करें,
हर संदेह को विवादास्पद समझें, निदान करें, निदान करें।

मन को समझाएं

सुनकर के आहटें कैसे न उठूं,
खिड़कियों को खोल अपना दिन शुरु कैसे न करुं,
आ करके तो देख, आगोश में, आलिंगन में,
प्रकृति संग एहतियात बरत,
मकड़जाल से निकल करके देख, जी उठेगा मन।

भरकम प्रयास भी हो जाते हैं,
संग जीवन सफल हो जाते हैं,
कहने को कोई बात नहीं बचती,
कर्मों के फलस्वरूप दिये,
खुद से जल जाते हैं।

दिशाएं बता दी गयी हैं,
फिर भी पांव क्यों लड़खड़ा रहे हैं,
खुद को,अपनों को,
महफूज रखने के सार्थक
प्रयास क्यों नहीं कर पा रहे हैं।

हर बात कहने की जरुरत नहीं,
हर हसरत रुखसत करने की हिम्मत नहीं,
हर कार्य खुद से करने की चाहत भी नहीं,
रूह को रुहानियत बताने की ही फितरत नहीं।

बढ़े चलो, बढ़े चलो!

जैसे हर सुबह जोश भरती है, कविता रोम-रोम से उठ खड़ी होती है,
शब्दों का चयन, भावों का वहन, चुपचाप गुजिंत होता है

लहरों का आखों से सत्कार करो,
संघर्ष की आपबीती को नयनों में भर लो,
हर प्रयास में उमंग है, कोई चुभन नहीं,
हर प्रयोग गहन है, लगन संग पर कोई तनाव नहीं,

सिखाने को जरा-जरा नयी कहानी लाया है,
शब्दों ने कभी पद्य, तो कभी गद्य को अपनाया है,
परिन्दों ने सात समुद्र पार कर दिखाया है,
इसांन क्यों अपनी ही घरोन्दें में क्यों विवश हो आया है,

जैसे बोयो, तैसन काटो, चरितार्थ हो आया है,
हर सुबह कुछ सवाल करो खुद से जवाबों ने कहलाया है,
दिशाओं की दिशा बदल देनी होगी,
पथों ने टकरा करके, एक आलोकिक संदेश भिजवाया है.....।

कुछ भी नहीं बिगड़ा, भूलकर के आगे बढना है,
हर सुबह से सबक ले, निरन्तरता को समझना है,
पढो-लिखो, आगे बढ़ो, यही करते आये, यही करना है,
वक्त की यही आवाज है,
सुनो, अनुसरण करो, रोजाना ही करना है।
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

हम जागेंगे

फूलों को पसंद है जैसे
काटों का साथ निर्वाह धर्म हो जैसे,
वीरों की सेज सजाने की अभिलाषा हो जैसे,
हर पल न्योछावर होने को, तन, मन हो जैसे,

अवाम के लिये, हर सैनिक बोलता है,
सरहदों पर डट करके बोलता है,
सासों में उसके जयहिंद बोलता है,
धडकनों में भारत माँ तेरी कसम, खून बोलता है...।

राष्ट्र की खातिर, हमें सोचना हैं,
हम ही हैं सरकार, हमें समझना है,
ओझल न हो लक्ष्य हमें,
सुनिश्चित करना है,
अधूरे कार्यों को हाथों से सम्पन्न करना है।

कोई आह्वान करेगा, हम जिम्मेदारी निभाएंगे,
क्या हो है पडोस में, अनभिज्ञ रह जाएंगे,
हम भारतवासी हैं, हम भी भारतवर्ष बनायेंगें,
हर सुबह में उठ करके, खुद से कदम बढाएंगे, खुद से अलख जगाऐंगें।

बदलते परिवेश संग

हम सभी एकजुट हैं, डर नहीं है मन में बस,
बल्कि राष्ट्रीय हित है, हमनें चुनौती स्वीकारी है,

सकंट की घडी में संकल्प ले,
हिदायतें दिल में उतारी हैं,
परिणाम भी आने लगे हैं,
कार्य भी बेहतर होने लगे हैं,

सृजनात्मक स्वर गूंजने लगे हैं,
गली कूचे अगरचे खाली हैं,
खिडकियों के दरवाजे बंद नहीं होने वाले हैं,
नये से नये नजारे नयनों में उतरने वाले हैं,

प्रकृति का संदेह सिर आखों पर ले लिया है,
मन में अब कोई संदेह, संशय भी नहीं है,
अब कोई हैरान नहीं है,
संयम से सयोंगवश परिचय हो चला है,

कुछ सृजन करने को मन हो चला है।
सृजन का निश्चय स्थाई सा हो चला है,
तन को आराम व मन को सफर करना,
आदत सी हो चली है.....।

अभिप्राय

हम समाज सृजन के उन्मुख परिन्दें हैं,
अपनी कल्पनाओं के संग गम पी रहे हैं,
लोग तनाव में, तन्हाई को कोस रहे हैं,
हम भूलने की कोशिश में लगे क्षमता टटोल रहे हैं।

सुबह होने का अभिप्राय समझ रहे है,
प्रकृति के आलिंगन से रुबरु हो रही हैं,
फिजाओं की परिभाषा खोज रहे हैं,
मुस्कान मुखरित हो रही, टोह ले रहे हैं।

संघर्ष में कौन नहीं लगा है,
हर परिंदा दाने दाने की खोज में लगा है,
हवा में भीनी-भीनी महक का सुखद संघर्ष दिख रहा है,
वनस्पति, जीव प्रजातियों में परिपक्व होता
सामजस्य दिख रहा है।

उधेड़बुन के आगे भी राहें हैं,
हम सभी को थामें हसरत भरी निगाहें हैं,
आओ एक लम्बे सफर के लिये आश्वस्त हो जाएं,
हसरतें हैं, उमगों की कसरतें हैं,
साथ निभाने को प्रकृति की खुली बाहें हैं।

प्रशासनिक कविता

सुबह हो उठी, मुखर हो उठी, जागी मन में एक कविता,
फिर कैसे नहीं मैं लिखता, एक प्रशासनिक कविता,

जन साधारण की भाषा में,
जन साधारण की अभिलाषा लिये,
रोटी कपड़ा और मकान की दास्तान,
कहते नहीं थकती कविता,

नपी-तुली एक नीतिगत कविता,
समान अधिकार सिखाती, सामाजिक कविता,
भावों में अवरिल नहीं बह जाती है,
हमारी भी जिम्मेदारी है, एहसास कराती कविता,

बन्धनों में मुखरित होती कविता,
बन्धनों को तोडती, नियम बदलती कविता,
हरियाली संग, मन का पेट भरती कविता,
जिम्मेदारी के बोझ में भी मनोंरंजन करती कविता,

सत्यबोध करवाती कविता,
समाज को सरकार से जोड़ती कविता,
विपरीत परिस्थितियों से नहीं मुख मोडती कविता,
कृत्तव्यविमूढ प्रशासनिक अधिकारी को झंझोड़ती कविता.....।।

डटे रहो, डटे रहो, हठयोग से निकलती कविता....।।

शब्दशक्ति

शब्दों से सिलसिला शुरू होता है,
शब्दों से आहटों का नामकरण होता है,
शब्दों से प्रकाश सा, ऊर्जा का जनन होता है,
उत्पत्ति सी होती है, उत्थान पतन होता है

शब्दों से हम सहारा लेते हैं,
शब्दों से हम किनारा भी करते हैं,
शब्दों से हम सहमति व्यक्त करते हैं,
शब्दों से हम सामाजिक बनते हैं।

शब्द समसामयिक होते हैं,
शब्द हालातों के प्रयायी होते हैं,
हालांकि होते हैं, देशज व कलिष्ठ भी,
गीतों में, अभिव्यक्ति में, सुखद प्रीत होते हैं।

शब्दों में अर्थ हैं,
शब्दों में आग्रह हैं,
शब्दों में छिपे भाव हैं,
शब्दों के भी संदर्भ हैं।

शब्दों की महिमा अपार है,
स्तुति का जन्म है, मंत्रों का उच्चारण है,
शब्दों के अर्थ बेमिसाल निकलते हैं,
शब्द निर्झर निकलते हैं, सृजित भी होते रहते हैं.....।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

सृजन का शाब्दिक अर्थ है रचना। रचना हमें रचियता की याद दिलाता है, जो हर सुबह, दिन, शाम, रात को रचकर मुस्कुरा भर देता है। हम सभी को प्रेरित भी करता है, उदाहरण भी देता है व अनुस्मारक भी देता रहता है। ऐसा ही मैं अन्तरा शब्दशक्ति से जुडकर अंतरगता से महसूस कर रहा हूं। कल अनुस्मारक पाकर मैंनें भी हठधर्मिता निभाई है और अपने आलेख व रचनाओं संग आपके समक्ष हूं।

नव प्रयास ही नवजीवन की नवजोत है, सृजनस्थली से उत्पत्ति ही, भावों से ओत्र प्रोत्र है। ऐसे विचार, भाव आते हैं, अनुभव में बदल जाते हैं, शब्दशक्ति के प्रभाव में रचनाओं का आकार लेते हैं।अन्तरा शब्दशक्ति से जुडकर रचनाओं को साझां करने की प्रेरणा मिलती है व हर माह एक बार छपने का विश्वास बना रहता है व प्रेरणा स्वरूप प्रतिक्रिया का सिलसिला बना रहता है। प्रयोग ही जीवन हैं, प्रयोग से ही परिवर्तन संभल हैं व प्रयोग से नवजोत का प्रारंभ है।

आपातकाल एक सर्जींवनी की तरह आया है। जीवनशैली में अनुशासन का लौटना संभव हो पाया है। सृजनात्मकता का विस्तार होता चला जा रहा है।पहले केवल कविता लिख रहा, अब लघु कहानी,समीक्षा आदि की विधा में भी हाथ मैंनें बढाया है। मैं धन्यवादी हूं व रहूंगा। मैं सभी सदस्यों से, अनुशासन की अनुभूति हेतु, ऐहसास की ईश्वर से मंगल कामना करता हूं और आप सभी में सृजनात्मक शक्ति में वृद्धि की चाहत देखना चाहता हूं।

रचनाकार

शैलेन्द्र कपिल

बी./२, रानी कुंज, रेल सदन
चन्द्रशेखर (भुवनेश्वर)
पिन-७५१०१७

Email- Kapilirts@gmail.com

Mobile - 8455885903

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-173-2

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/